कथा सरिता

जब साधक ने पाया साधना करने का उचित मार्ग

एक जिज्ञासु साधक को श्रेष्ठ गुरु की तलाश थी। उसके मस्तिष्क में कई प्रकार के प्रश्न उठते थे जिनका समाधान अब तक कोई नहीं कर पाया था। एक दिन वह इसी खोज में घूमता हुआ एक संत के आश्रम पहुंचा। संत का व्यक्तित्व सहज, सौम्य और तेज से भरा था। साधक ने प्रभावित हो उनसे अपने प्रश्नों के उत्तर चाहे। संत ने उसे प्रश्न पूछने की आज्ञा दी। वह बोला - प्रभु! मैं कौनसी साधना करूं। संत ने उत्तर दिया। तुम बड़े जोर से दौड़ो। दौड़ने से पहले यह निश्चित कर लो कि मैं भगवान के लिए दौड़ रहा हूँ। बस यही तुम्हारे लिए साधना है। साधक ने पूछा तो क्या बैठकर करने की कोई साधना नहीं है? संत बोले - है क्यों नहीं, बैठो और निश्चय करो कि तुम भगवान के लिए बैठे हो।

साधक ने पुन: प्रश्न किया - भगवन। कुछ जप नहीं करें। संत ने समझाया - किसी भी नाम का जप करो, तो सोचो भगवान के लिए सोच रहा हूँ। साधक ने सवाल उठाया - तब क्या क्रिया का कोई महत्व नहीं। केवल भाव ही साधना है। संत ने समझाया - क्रिया की भी महत्ता है। क्रिया से भाव और भाव से ही क्रिया होती है, इसलिए दृष्टि लक्ष्य पर रहनी चाहिए। फिर तुम जो कुछ करोगे, वही साधना होगी। भगवान पर यदि लक्ष्य रहे तो वे सभी को सर्वत्र सर्वदा मिल सकते हैं।

सार यह है कि लक्ष्य यदि ठीक रखा जाए तो साधना स्वयंमेव ठीक हो जायेगी। पवित्र साध्य की साधना भी पवित्र हो जाती है और

बुद्धिमान साहूकार ने अपनी सूझबूझ से टाला संकट

एक राजा बड़ा बुद्धिमान और व्यक्तियों का बड़ा कद्रदान था। उसके दरबार में प्राय: ऐसी प्रतिस्पर्द्धाओं का आयोजन होता था, जो बुद्धि और चतुराई पर केंद्रित होती थी। इनमें जीतने वालों को राजा की ओर से बड़ा पुरस्कार और सम्मान दिया जाता था। एक बार राजा अपने दरबारियों के बीच बैठा था। परस्पर बातचीत में उसे मालूम हुआ कि साहूकार बड़े बुद्धिमान और होशियार होते हैं। वे सभी प्रकार की चीजों का मूल्य आंक लेते हैं। राजा ने अपने मंत्री को भेजकर नगर के एक प्रसिद्ध साहूकार को बुलवाकर कहा - यह मेरा पुत्र है। इसका मोल बताओ। साहूकार घबरा गया, क्योंकि वह वस्तुओं की परख कर सकता था, इंसानों की नहीं। उसने राजा से कुछ दिनों की मोहलत ली और एक बुजुर्ग साहूकार से सलाह ली। बुजुर्ग साहूकार अनुभवी था। उसने तुरंत उपाय बता दिया। अगले दिन साहूकार दरबार में पहुंचा और राजा से बोला - राजकुमार के दाम तो ठीक-ठीक बता दूंगा, किंतु आप बुरा मत मानना। यह कहते हुए उसने राजकुमार को ललाट छूकर कहा - राजन, ललाट के लेख का तो कोई मूल्य नहीं हो सकता, वैसे राजकुमार दो आने रोज का मजदूर है। राजा समझ गया कि किस्मत की कीमत कोई नहीं आंक सकता, किंतु यदि राजकुमार मजदूरी करे तो उसे दो आने से अधिक नहीं मिलेंगे।

राजा ने साहूकार की बुद्धिमानी देख उसे पुरस्कृत किया। सार यह है कि सूझबूझ और अनुभव का कोई जोड़ नहीं होता। यदि बड़े से बड़ा संकट भी आ जाए तो सूझबूझ से काम लेने पर संकट टल सकता है।

नि:स्वार्थ लोक सेवा के बल पर संत को मिला स्वर्ग

एक संत थे, जो दुनिया से बेखबर, अपने भगवद्-भजन में लीन रहते और किसी से कोई सरोकार नहीं रखते थे। वृद्धावस्था में एक दिन वे मृत्यु को प्राप्त हुए। मरने के पश्चात संत स्वर्गलोक पहुंचे। स्वर्गलोक के द्वार पर चित्रगुप्त अपना हिसाब-किताब लेकर बैठे थे। उन्होंने साधु का नाम-पता पूछा। तब साधु ने बड़े गर्व से कहा - क्या आप नहीं जानते कि मैं धरती का अमुक संत हूँ? चित्रगुप्त ने प्रश्न किया - आपने अपने जीवन में कौन-से उल्लेखनीय कार्य किए? संत ने उत्तर दिया - मैं जीवन के आरंभिक आधे भाग में तो लोगों से प्रेम करता रहा और दुनियादारी में डूबा रहा। जीवन के अंतिम आधे भाग में मैंने सब कुछ छोड़कर तपस्या की और पुण्य लाभ लिया। यह सुनकर चित्रगुप्त बोले - आपसे जीवन के आरंभिक भाग में ही पुण्य हुए हैं, पिछले भाग में तो कुछ भी नहीं है। संत ने कहा - यह तो उल्टी बात है। आरंभिक जीवन तो मैंने संसार से प्रेम करने में बिताया। यथासंभव सभी की सेवा और सहायता की, किंतु जीवन के अंतिम भाग में सांसारिकता से परे रहकर एकांत में परमात्मा की आराधना की, तो वही तो जीवन की सार्थकता है। तब चित्रगुप्त बोले -धरती पर प्रेम, आत्मीयता और परहित में लगे रहना ही पुण्य है। ईश-पूजा और मानव सेवा के कारण ही तुम्हें स्वर्ग की प्राप्ति हुई है। वस्तुत: नि:स्वार्थ जनसेवा ही सच्चे अर्थों में प्रभुसेवा है, क्योंकि यह दुनिया प्रभु की बनाई हुई है, इसलिए

दु:ख में सुख

एक फकीर हुआ है - शेखसादी। बड़ा विद्वान संत था। वह अनुभवी था। एक दिन वह सड़क से गुजर रहा था कि उसने सामने से आते हुए एक लंगड़े भिखारी को देखा। भिखारी की एक टांग टूटी हुई थी। वह लकड़ी के सहारे चल रहा था और भीख मांग रहा था। पर उसके चेहरे पर जो प्रसन्नता, संतुष्टि और आनंद झलक रहा था, वह अद्भुत था। वह दर्शाता था कि वह बहुत सुखी है। शेखसादी को बहुत आश्चर्य हुआ। शेखसादी ने उससे पूछा - तुम तो भिखारी हो, बड़ी आभावपूर्ण जिंदगी है तुम्हारी। तुम पैरों से भी लाचार हो, फिर क्या कारण है तुम्हारी इस प्रसन्नता का, संतुष्टि और आनंद का?

ऐसा आनंद और संतुष्टि तो बड़े-बड़े धनपतियों के चेहरे पर भी नजर नहीं आती। क्या कारण है? भिखारी ने बड़ी प्यारी बात कहीं। उसने कहा, 'यह सच है कि मैं गरीब हूँ, लाचार हूँ। यह भी सच है कि मैं भीख मांगता हूँ, मैं भिखारी हूँ, पर मैं यह सोचकर प्रसन्न और संतुष्ट बना रहता हूँ कि इस दुनिया में हजारों - लाखों ऐसे भी लोग हैं, जिनकी स्थिति मुझसे भी बदतर है। उनके न हाथ है, न पांव है, कुछ अंधे हैं, कुछ बहरे हैं, तो कुछ दोनों ही हैं। तो कुछ अंधे, बहरे के साथ गूंगे भी हैं। कुछ बोल भी नहीं सकते। मेरे तो सौभाग्य से दो कान है, जिनसे मैं सुन सकता हूँ, दो आँखें हैं, जिनसे मैं देख सकता हूँ, दो हाथ है, जिनसे मैं खा-पी सकता हूँ तथा जिन्हें फैलाकर भीख मांग सकता हूँ।

मैं सोचता हूँ कि मैं उन लोगों से कितना बेहतर हूँ। फिर मैं क्यों न हंसू? एक पैर नहीं है, तो क्या हुआ? बाकी तो सब कुछ है, दु:ख में से सुख खोजने की कला। जो है, उसमें राजी रहो, बस, स्वर्ग तुम्हारी मुट्ठी में होगा। दु:ख में सुख खोजना भी एक कला है, वह कला तुम्हें सीखनी होगी। ऐसा कोई दु:ख नहीं है, जिसमें थोड़ा-बहुत सुख न हो। बड़े-बड़े दु:खों में बहुत-से छोटे-छोटे सुख छिपे होते हैं।

जोधपुर। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए श्री श्री 1008 महंत स्वामी अचलानंदगिरी जी महाराज, संत रामप्रसाद महाराज, संत श्री हरीराम महाराज, नित्यमुक्ता अनिता, विधायक सूर्यकांता, ब्र.कु.शील तथा अन्य।

काठमाण्डु (नेपाल)। 'शांति दिवस' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए उप राष्ट्रपति परमानंद झा साथ में हैं ब्र.कु.राज, ब्र.कु.रामसिंह तथा अन्य।

किच्छा (बरेली)। वरिष्ठ भा.जा.पा नेता राज पपनेजो को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सरोज साथ में ब्र.कु.प्रभा।

कोचिन। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सहयोग मंत्री सी.एन.बाल क्रिसनन, गुरावापुर देवाश्रम के टी.वी.चंद्रमोहन, ब्र.कु.राधा, ब्र.कु.सैनी तथा अन्य।

कोहिमा। 'नार्थ ईस्ट युवा शांति एवं सांस्कृतिक उत्सव' को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.रूपा साथ में हैं फादर जार्ज, बेपिस्ट पास्टर लूथा तथा अन्य

इंदौर। टैक्सी ड्राइवर एवं ट्रेफिक पुलिस के जवानों के लिए आयोजित कार्यक्रम 'सुखद एवं सुरक्षित यातायात' को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.शारदा।